मूल्य : 20 रुपये
ISSN 0973-1490
वर्ष-13 अंक-4
अप्रैल-जून 2016

चिन्तन-सृजन

www.asthabharati.org

त्रैमासिक

आस्था भारती, दिल्ली

औपनिषद् नीति-दर्शन का दिग्दर्शन*

अम्बिका दत्त शर्मा**

प्रो. ए. जे. एयर ने जो पाश्चात्य नीतिशास्त्र के संस्थापक विद्वान् हैं, नॉवेल स्मिथ की प्रसिद्ध पुस्तक 'एथिक्स' की प्रस्तावना लिखते हुए नैतिक उपदेशक और नीति-दार्शनिक में स्पष्ट अन्तर को प्रस्तावित किया था। इस अन्तर को ध्यान में रखते हुए आचार-संहिता मूलक नैतिक चिन्तन और दार्शनिक नैतिक चिन्तन में स्वरूपगत महत्त्वपूर्ण अन्तर को भी रेखांकित किया जा सकता है। उपदेशात्मक नैतिक चिन्तन वह है, जो हमारे समक्ष विधि-निषेध परक एक व्यापक आचार-संहिता को प्रस्तावित करता है और साथ ही साथ उसके अनुपालन के लिए हमें प्रोत्साहित भी करता है। इसके विपरीत नैतिक-दार्शनिक चिन्तन हमारे समक्ष न तो किसी प्रकार की आचार-संहिता का प्रस्ताव करता है और न ही उस पर अमल करने के लिए हमें प्रोत्साहित करता है। वस्तुतः नैतिक दार्शनिक चिन्तन अपने स्वरूप में विश्लेशणात्मक और विमर्शात्मक होता है। उसका कार्य नैतिक निर्णयों के स्वरूप की विवेचना करते हुए उन विशिष्ट मानकों की खोज-बीन करना है, जो हमारे कर्मों के औचित्यानौचित्य के निर्धारण में सहायक होते हैं।

अब भारतीय नैतिक चिन्तन के स्वरूप को लेकर एक आम धारणा बनी हुई है कि भारत में आचार-संहिता मूलक नैतिक चिन्तन का एक लम्बा और समृद्ध इतिहास रहा है। वैदिक परम्परा के गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रीय परम्परा के विभिन्न स्मृतियों एवं नीति-ग्रन्थों में विधि-निषेध मूलक आचार-संहिता के व्यापक सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। भारतीय परम्परा की निज पदावली में इसे ही 'धर्म' कहा गया है। यह 'धर्म'

*समीक्ष्य पुस्तक–उपनिषदों का नीति-दर्शन, लेखक - सन्तोष आचार्य, प्रकाशक- प्राकृत भारतीय अकादमी, जयपुर मूल्य 250/- प्रथम संस्करण 2014.

**समीक्षक–प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, दर्शन विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003 , मोबा. 9406519498